पुरोवाक्

सर्व–हित के गुण विशेष से उपपन्न होने के कारण साहित्य विश्व में समादृत है। वैयक्तिक धरातल पर उद्‌भुत होकर भी समष्टि को प्रभावित करने की क्षमता साहित्य मात्र में है। साहित्य एकदेशीय अथवा एक कालिक न होकर सर्वदेशीय तथा सर्वकालिक होता है तथा लोक–चेतना को जगाता रहता है। उसकी यह प्रक्रिया सतत् चलती रहती है तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी, दूसरी पीढ़ी से तीसरी पीढ़ी को अन्तरित होती रहती है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की भावना से उद्‌भूत वैदिक साहित्य निरन्तर समृद्ध तथा भावी पीढ़ी को अन्तरित होता गया। सम्बर्द्धन तथा संक्रमण की प्रक्रिया के कारण वैदिक साहित्य ने वृहदृ आकार प्राप्त कर लिया जिससे मानव में उसके धारण की न्यूनता उत्पन्न हो गयी। परिणामतः ऐसे साहित्य की आवश्यकता प्रतीत हुई जो सम्पूर्ण वैदिक साहित्य को अनुस्यूत कर सूत्र शैली में इसे लिपिबद्ध करे। सूत्रग्रन्थ इसी भावोष्मा का मूर्तरूप है। गौतम, बौधायन, आपस्तम्ब, वशिष्ठ, वैखानस तथा हारीत प्रभृत मनीषियों ने जिस साहित्य का सृजन किया वह कल्पसूत्र के नाम से अभिहित हुआ। अपनी वर्ण्य–विषय की विशेषता के कारण कल्पसूत्र को श्रौतसूत्र, गृह्ययसूत्र धर्मसूत्र तथा शुल्वसूत्र में विभक्त किया गया। धर्मसूत्र मानवजीवन के अनेक पक्षों को आलोकित करता है। वर्ण, आश्रम, संस्कार, परिवार, विवाह, खान–पान, रहन–सहन, शिक्षा, कृषि, पशुपालन, उद्योग, व्यापार, कर ब्याज आदि विषयों का स्वरूप इसमें निदर्शित है।

माननीय उच्च न्यायालय न्यायमूर्ति माननीय श्री अब्दुल मतीन महोदय के सम्पर्क में रहते हुए अनेकशः मुझे धर्मशास्त्रों के ऐसे कतिपय प्रसंगों को सुनने का अवसर मिला जो भारतीय जीवन दर्शन के नियामक थे। परिणामतः मेरे मन में भी उक्त साहित्य के अध्ययन का बीज अंकुरित हुआ। इस चेतना को अंकुरित करने वाले माननीय अब्दुल मतीन महोदय को अनेकशः प्रणाम करता हूँ। शोध–अध्ययन की इच्छा से आकुल मै जब अपने शोध निर्देशक श्रध्येय **डॉ0 ए0पी0 मिश्र** के समक्ष उपस्थित हुआ तो मेरी आकुलता को देख उन्होंने न केवल निर्देशन की सहज स्वीकृति ही दे दी अपितु शोध–कार्य के समस्त गतिरोधों को समय–समय पर दूर कर उसे सहज एवं सुगम बना दिया, अतः मैं उनके प्रति सतत! विनयावनत हूँ। मैं अपने पिताबन्धु **(दादा) स्व0 श्री रूद्र प्रताप सिंह** एवं **श्री तेज बहादुर सिंह** तथा **स्व0 श्री दुर्विजय सिंह** का प्रथमतः स्मरण करते हुए उनके श्री चरणों मे श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ। जिनके सत्कर्मों के कारण ही मेरे परिवार में शान्ति, समृद्धि एवं सौमनस्य व्याप्त है। ज्ञान योग, कर्मयोग तथा भक्तियोग को ही जीवन का लक्ष्य स्वीकार करने वाले

श्रद्धेय पिता **श्री शम्भूशरण सिंह** तथा भारतीय संस्कृति के आगोश में लिपटी हुई ममतामयी माता **श्रीमती देवकुमारी** की पादच्छाया की अनेक जन्मों तक कामना करता हुआ मैं उनको बार–बार प्रणाम करता हूँ। उनसे प्राप्त स्नेह, प्यार तथा शिक्षा को शब्दों की सीमा में बांध पाना मेरे बलबूते की बात नहीं है। मैं अपने अग्रज **श्री अवधेन्द्र प्रताप सिंह, श्री महेन्द्र प्रताप सिंह,** वात्सल्य की प्रतिमूर्ति भाभी **श्रीमती मधूरानी सिंह** तथा **श्रीमती अनीता सिंह** के प्रति भी सतत् नतमस्तक हूँ जिन्होंने मुझे अपरिमेय प्रेरणा तथा शक्ति प्रदान किया। अनुज **श्री राज बहादुर सिंह** एवं **डॉ0 जंग बहादुर सिंह** के योगदान तो सदा अविस्मरणीय रहेगें क्योंकि अध्ययन अवधि में उन्होंने पारिवारिक उत्तरदायित्वों को कभी आड़े हाथ नहीं आने दिया। बहिन **श्रीमती राजदुलारी, श्रीमती माधुरी** तथा **श्रीमती कंचन** का उत्साहवर्धन तो सदैव अविस्मरणीय रहेगा। मैं अपनी धर्मपत्नी **श्रीमती माधुरी सिंह** के सहयोग को कैसे भुला सकता हूं जिन्होंने मेरे शोधकार्य की पूर्णता हेतु न केवल अपना सर्वविधि सहयोग किया अपितु मेरे जीवन में मनु की इस अवधारणा को भी साकार किया कि स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन्।

जिन मनीषियों तथा लेखकों की कृतियों को आधार मानकर शोधकार्य को पूर्णता प्रदान की गयी मैं उनके प्रति भी आभार एवं सम्मान व्यक्त करता हूं। विभिन्न पुस्तकालयों एवं पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रति भी मैं श्रद्धावनत हूँ जिनका मुझे अपरिमेय सहयोग प्राप्त हुआ है। मैं **श्याम बक्श सिंह स्ना0 महा0 हलियापुर, सुलतानपुर** तथा **परागदेई महिला महाविद्यालय हलियापुर** के उन शिक्षण तथा शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष कार्य–सम्पादन में अपना सहयोग प्रदान किया है। टंकण **योगेश (साकेत कम्प्यूटर्स)** का भी सहयोग सदा अविस्मरणीय रहेगा जिन्होंने पूर्ण मनोयोग तथा अथक परिश्रम से अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया।

रामनवमी
विक्रम सम्वत्–
वि0सं0

धीरेन्द्र प्रताप सिं

(धीरेन्द्र प्रताप सिंह)